INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"अमूर्त चित्रकला शैली में रंग संयोजन"

डॉ. कुमकुम भारद्वाज
सहायक प्राध्यापक – चित्रकला विभाग
श्रीमती मोनिका यादव (शोधार्थी)
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, किला भवन, इंदौर

वर्ण अर्थात रंग किसी भी कलाकृति का प्राण है जो दृष्टि एवं प्रकाश पर निर्भर करता है प्रत्येक वस्तु में कोई न कोई रंग विद्यमान होता है अतः किसी भी वस्तु की पहचान रंगों के कारण होती है।

रंग प्रकाश का गुण है रंग का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है अपितु अक्षपटल द्वारा मस्तिष्क पर पड़ने वाला प्रभाव रंग है एक ही रूप की दो वस्तुओं को पृथक–पृथक रंगों द्वारा पहचाना जाता है रंग वस्तु का वह गुण है जिसका अनुभव हम नेत्रों द्वारा करते है प्रकाष की उपस्थिति में ही हम किसी वस्तु को देख सकते है अतः प्रकाश हमें रंगों का बोध कराता है।

तूलिका और रंगों का निर्माण के संबंध में सदैव अनेक प्रयोग होते रहे है। भरत नाट्य शास्त्र के 21वें अध्याय में रंगों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है चित्रकार को इन सबके संबंध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। नाट्य शास्त्र में यह भी बताया गया है कि कौन–कौन से रंग मन पर क्या प्रभाव डालते है अतः इस पर भी ध्यान देना चाहिये।[1]

रंग प्राथमिक – (लाल, पीला, नीला) और द्वितीयक – (नारंगी, हरा, जामुनी) होते है।
रंगों के अपने प्रभाव है जैसे :–उत्तेजकता, संघर्ष, प्रेम, प्रकाश, बुद्धिमता, आनंद, अवसाद, विश्राम, सुरक्षा, मनोहरता, ज्ञान, प्रेरणा, सत्यता, भय आदि। एक कलाकार रंगों के माध्यम से रसमय एवं भावपूर्ण बनाकर उसे जीवंत करता है जिससे कला रसिक आनंदित होता है। किसी भी चित्रकला शैली में रंगों का बहुत महत्व होता है। रंगों के विभिन्न प्रभावों तथा रंग–योजना की मौलिकता किसी कलाकार की शैली के निर्धारण में बहुत सहायक होती है।[2]

अमूर्त चित्रकला शैली का जन्म अनेक तत्वो के सम्मिक्षण से होता है। धर्म, समाज आदि की पुरातन व्यवस्थाओं और परम्पराओं का विरोध करना तथा उनके स्थान पर नवीन व्यवस्थाओं और परम्पराओं की स्थापना इसका मुख्य उद्देश्य रहा। आज भी इसी उद्देश्य को लेकर आगे बढ़ रही है। अमूर्त कला की मूल धारणा यह है कि कला का महत्व रूपों और रंगों के तात्विक एवं विशुद्ध कलात्मक मापदण्डो पर आधारित होता है और विषय वस्तु तथा सादृश्य आदि के बाहरी तत्वो से वह पूर्ण स्वतंत्र होती है। यह धारणा पर्याप्त प्राचीन है और आलंकारिक तथा अर्थयातुक ;मउप डंहपबंसद्ध कला में भी मिलती है।[3]

अमूर्त चित्रकला शैली में कलाकार स्वतंत्र रूप से अपने चित्रो की रचना करता है वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से कैनवास पर उकेरता है। इस चित्रकला शैली की विशेषता है कि चित्रकार हर बंधन से मुक्त होकर किसी भी रंग रेखा विषय आकार–प्रकार का उपयोग कर अपने चित्रों का निर्माण कर सकता है। अमूर्त कला में चित्रों में मोटाई गोलाई लाने के लिये विशेष क्रिया का प्रचलन है। प्राकृतिक वस्तुओं के वास्तविक रूपो के स्थान पर उनके बिम्बो अथवा प्रतीकों का चित्रण।

किसी घटना विशेष के आंगिक चित्रण के स्थान पर मनोभाव अथवा मनःस्थिति का चित्रण अमूर्त चित्रकला शैली में भी रंगों का बहुत महत्व है। अमूर्त शैली में चित्रकारों ने भी अपने चित्रों में रंगों के माध्यम से जीवन के विविध पक्षो को उजागर किया है। जीवन की अनेक प्रकार की अनुभूतियों और भावों को ही अमूर्त कला में व्यक्त किया है। रंगों से अमूर्त कला में सौंदर्य की वृद्धि एवं प्रतीकता की सृष्टि होती है।

अमूर्त कला वह कला है जो हमारे मन, भाव व विचारों से जुड़ी है जिसे हम व्यक्त नहीं कर सकते, उसे हम चित्रों के द्वारा समझ सकते है। अमूर्त कला के माध्यम प्रतीक, रंग, रेखाएँ, बनावट (टेक्चर) आदि होते है। अमूर्त कला मूर्त रूपों को तोड़ मोड़कर बनायी जाने वाली कला है। मूर्त रूपों का ज्ञान अच्छे से नहीं होगा तो अमूर्त रूप कहा से आयेगा। आज के इस युग में हमे अपनी आंखो व मन से देखने की आवष्यकता है तभी हमारी कला से हमारी पहचान बनेगी।

ग्वालियर की चित्रकला डॉ. सुनीता प्रजापति के द्वारा बनाये गये चित्रों के विषय स्वनिर्मित है किसी परिवेश से नहीं। उनके मन में जो भी आकृतियाँ रंग भाव व विचार चलते थे उन सभी को चित्रों में उतारने का प्रयास किया है। जिनमें आक्रोश की कोई

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पहचान नही हैं जिसे हमने कभी देखा नही सिर्फ महसूस किया है। सांस्कृतिक गतिविधियों से दूर एक विचित्र अलौकिक रूप जो सदैव हम महसूस करते है उसे ही साकार रूप देने का प्रयास किया है। उनके चित्रो में रंग ही विषय है रंगों को आपस में मिलते–जुलते, खिल–खिलाते व बाते करते अनुभव किया जाता है। काले रंग से घिरे प्रकाश को शक्तिशाली बताया है जो बुराईयों से लड़ने की प्रेरणा देता है। पूरे स्पेस में ज्यमितिय आकारों व रंगों को मध्य से बड़ा नपातुला विभाजन किया है जो सिर्फ अनुमानित है उपकरणों का उपयोग नही किया है सभी व्यवस्थित ढंग से चित्रित है, कुछ भी कही भी नहीं बना है खाली स्पेस खाली ही रखा है। रंगों की प्रधानंता है मध्य की रेखा शिखर तक जाती हुई एक रंग को दूसरे रंग में दूसरे रंग को तीसरे रंग में तीसरे रंग को चौथे रंग में ले जाती है। इस बात से ये प्रतीत होता है कि जब ऊँचाई की और जाते है तो सहयोग करने वाले एक नहीं कई हाथ होते है यह भी कह सकते है कि सभी हाथ पकड़कर ही आगे बढ़ते है उनके चित्रों में बहुत ही सुंदर रंगों का मिश्रण किया गया है। ड्रॉयपेस्टल रंगों को आपस में हाथों द्वारा मिक्स इस प्रकार किया गया है। जैसे प्रिंट निकाला गया हो उनके चित्रों में आध्यात्मिक शांती प्रतीत होती है। कहीं शिव तो कहीं माता का तेज व नारी का मातृत्व सौंदर्य युगल विद्यमान है। चित्रों में विशेष तौर पर ज्यामितीय आकारों का प्रयोग कर अंधकार में किसी एक बिन्दू से प्रकाश उठता दिखाया गया है। सभी चित्रों में मुख्य गोल आकार है जो अलग–अलग रंगों द्वारा घूमता हुआ प्रकाशमान होता है। कुछ काम के मध्य में आधार से लेकर शिखर तक सीधी जाती हुई एक रेखा है जो हर आकार के रंगों को आपस में जोड़ती है। संभवतः यह सभी आकार प्रतीकात्मक है साथ ही सभी चित्रों में शांत भाव व आनन्द की प्राप्ति होती है।

अमूर्त कला में हर चित्रकार को अपने तरीके से चित्रण करने का अवसर मिलता है। अमूर्त चित्रकार अवधेश यादव जी की चित्रण तकनीक भी बहुत साधारण है वे पहले कैनवास पर कोई रंग एकसार लगाते है वही बेकग्रउंड होता है इस रंग को ढीक से सूख जाने पर वे पूरे कैनवास को गीला कर उस पर एकेलिक रंगों का पतला घोल अपनी योजनानुसार बनाते है। बहाव के ये धब्बे और उनसे बनने वाले आकार दिलचस्प लगते है। तत्पश्चात् चित्र में कई सारी क्षैतिज रेखाओं के अलग–अलग कोणो पर खींचते है। प्रमुख रूप से रंगों के बहाव रेखाऐं तथा बिन्दु ये ही सब उनके चित्रों के स्थूल अवयव है। वे अपने चित्रों में एकेलिक रंगों का प्रयोग करते है गाढ़े रंगों के साथ ही साथ आजकल प्राप्त फ्लुइड एकेलिक रंगों का भी प्रयोग करते है। चित्रों में टेक्चर का प्रयोग नही है, कैनवास पर सपाट रंग लगाने के लिये ज्यादातर चौड़े फ्लेट ब्रुश का इस्तेमाल करते है। बहाव के लिये सेबल हेयर के गोल ब्रुश का इस्तेमाल कर के रंग बहाते है। कभी–कभी स्पाज रोलर का भी प्रयोग करते है। रेखाएँ खींचने के लिये ब्रो पेन का एकेलिक रंगों के साथ प्रयोग करते है।

ग्वालियर के चित्रकार दुर्गेश बिरथरे के अनुसार, अमूर्त चित्रकला शैली एक ऐसा माध्यम है जो कि कलाकार के मानसिक पटल के साथ नवचेतन जगत की परिकल्पना है। उनकी कला कृतियों में प्रकृति का रहस्यमय चित्रण किया गया है जो कि दुर्गेश जी की आंतरिक अनुभूति पर आधारित है चित्रों में एकेलिक रंगों का प्रयोग किया गया है।

भोपाल की चित्रकार भावना चौधरी के अमूर्त चित्रो में रंगों और आक्रोश का प्रमुख योगदान है रंग ही उन्हें निर्देशित करते है कि कौनसा फॉर्म कौनसी लाइन कहाँ तक कैसे लाना है। अमूर्त चित्र बनाने में व्यस ब्यसवनत ।बतलसपब का प्रयोग ज्यादा किया जाता है। किंतु शुरूआत में उन्होने च्मदबपस कतमेपदहे चारकोल आदि में काफी काम किया है ठसंबा ब्यसवनत में उन्होंने काफी काम किया है फिर धीरे–धीरे अपने चित्रों में रंगों को समाहित करती चली गई चित्रों में प्रतीकात्मक रूप से शांत भाव के लिये मछली चंचल चपलता के लिये छोटी–छोटी चिड़िया धार्मिकता के लिये त्रिकोण, त्रिशुल, मस्जिद, क्रास आदि दर्षाए गये है उनके द्वारा बनाए गए चित्रों के विषय प्रकृति से जुड़े हुए है। जैसे जिन्दगी के छोटे–छोटे खुषियों भरे पल, चिड़ियों को तिनका उठाये उड़ना, खिड़की की जाली पर बैढना, तितलीयाँ, बच्चों का बगीचों में जाकर विभिन्न तरह से खेलना जैसे पत्थरों पर भगवान बनाकर, बारिष में मिट्टी के मंदिर बनाना उन्हें चुड़ियों के टुटे टुकड़ो से सजाना, छोटे–छोटे पौधो में नई कोयलो का निकलना, विभिन्न मौसमों में पेड़ो में जो बदलाव आते है आदि।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 *डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम चंहम 47*
2 *डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम चंहम 47*
3 *डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल – कला और कलम चंहम 142*
4 *कासलीवाल मीनाक्षी भारती – ललीत कला के आधारभूत सिद्धांत – राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर*
5 *व्यक्तिगत साक्षात्का*